Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

वाल्मीकि रामायण में धर्म आज के परिपेक्ष में उसका औचित्य

डॉ० अनिल कुमार सिंह
पूर्व शोध छात्र,
विभाग संस्कृत,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत।

सारांश – यदि धर्म की रक्षा करते हैं, तो धर्म भी हमारी रक्षा करता है।

"धर्म एव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः" मनुस्मृति 8/15

वाल्मीकि रामायण के प्रणेता स्वयं वाल्मीकि ने समस्त महाकाव्य में इस बात को ही प्रश्रय दिया है तथा परवर्ती समाज को यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि धर्म की श्रेष्ठता हर युग में , हर समय प्रबल है । धर्म की रक्षा करने वाला कभी भी पराजित नहीं हो सकता। कुछ समय के लिए उसे कष्ट जरूर झेलना पड़ सकता है । परंतु उसका अंत हमेशा सुखद एवं सुफल ही होता है। महाभारत की कथा में यक्ष एवं युधिष्ठिर के बीच में जो वार्ता हुई है, यदि उसे देखा जाए तो भी यह निर्विवाद कहा जा सकता है, कि अपने भाइयों को गवां देने वाले युधिष्ठिर धर्म के बल पर ही उन्हें प्राप्त कर लेते हैं। स्वयं धर्म उनके सामने उपस्थित होकर उन्हें आशीर्वचन देता है तथा भाइयों को जीवित भी कर देता है।

वाल्मीकि के राम एक ऐसा ही नायक है, जिसने कहीं भी धर्म की ध्वजा- पताका का साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने हमेशा सत्य की रक्षा की है ,धर्म की रक्षा की है। इसका प्रतिफल सुखद हुआ है। अधार्मिको का नाश एवं धर्म की जय ही वाल्मीकि रामायण का मूल रहा है।

"धार्यते अनेन इति धर्मः" जिसे धारण किया जाए उसे धर्म कहा जाएगा। धर्म की इस व्यापक परिभाषा के अंतर्गत जिसे हम धारण करते हैं, वही धर्म है। मनुस्मृति में मनु ने धर्म के 10 लक्षण बताएं हैं-

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचमि्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[1]

याज्ञवल्क्य स्मृति में याज्ञवल्क्य ने धर्म के 9 लक्षण बताएं हैं-

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः
दानं दमो दया शान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।।[2]

महाभारत में वेदव्यास ने धर्म के 8 लक्षण गिनाए हैं ।जिसके अनुसार इज्या, अध्ययन ,दान, तप ,सत्य, दया क्षमा और आलोभ हैं। श्रीमद्भागवत ने तो धर्म के 30 लक्षण कहे गए हैं।[3]

वाल्मीकि रामायण समस्त धर्मों की खान है। इस महाकाव्य का नायक धर्म की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। राम को धर्म की खान तथा परवर्ती पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में दिखाया जाना ही महाकाव्य की अजस्र प्रवाहमयी धारा का प्रतिफलन है। मुझे रामायण के धर्म पुरुष श्री राम को धर्म परायणता की सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने में कोई हिचक नहीं है। राम का पुरुष पात्रावतार चित्रण करते हुए महर्षि वाल्मीकि कहते हैं कि श्रीराम विनम्र, मधुर भाषी, त्यागी, चतुर ,प्रिय वक्ता, लोकप्रिय, पवित्र, वाकपटु, स्थिर, युवक, बुद्धि - युक्त, उत्साही, प्रज्ञावान, शूर, दृढ़निश्चयी ,तेजस्वी ,शास्त्रज्ञ तथा धार्मिक चरित्र से संपन्न मानव हैं।

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रिय वदः ।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवशं स्थिरो युवा।।
बुद्धतुत्साह् स्मृतिप्रभा कलामान समन्वितः।
शूरो दृढश्च त तेजस्वी शास्त्र चक्षुश्च धार्मिकः।।[4]

मैंने आज तक ऐसे धार्मिक पुरुष अन्यत्र न तो देखें, न सुना ,नहीं परखा। सच तो यह है कि मनुस्मृति में जो धर्म के लक्षण बताए गए हैं, तदनुसार भी यदि प्रत्येक चरण पर श्रीराम को परखा जाए, तो यह आदि पुरुष, युगपुरुष एवं धर्म पुरुष के रूप में ही अवस्थित होने वाला चरित्र है।

धैर्य की प्रतिमूर्ति – धैर्य राम के जीवन का मूल मंत्र है। उनके वन गमन के प्रसंगों को देखना यहां ज्यादा समीचीन होगा, जहां नंगे पांव विभिन्न समस्याओं को झेलते हुए वे अपने धैर्य से विचलित नहीं होते। वन-गमन प्रसंग में जहां स्वयम महाराज दसरथ अधीर हैं, राजदरवारी, समस्त प्रजा, अधीर हो रही है वहां राम का धैर्य अविचिलित एवम स्थिर है। आज भारतीय जनमानस में यह गुण कूट-कूट कर भरा है । हमारी युवा पीढ़ी निसंदेह इस गुण को धारण करने में अक्षम हो रही है, पर श्रीराम के जीवन से धैर्य रूपी गुणों को ग्रहण कर लिया जाए तो कठिन से कठिन कार्य भी सुगम हो जाएगा। निसंदेह हमारी पीढ़ी श्रीराम के इस धार्मिक गुणों को आत्मसात करके अपना व अपने समाज को सन्मार्ग पर लाने में सक्षम हो सकेगी। महाबाहु श्री राम सभी के मार्गदर्शक रहे हैं। किसी भी स्थल पर उनके द्वारा कोई अनुचित कार्य नहीं होता। हर कार्य सोच समझकर करते हैं। आज की पीढ़ी राम के आदर्शों को अपनाकर अपने आप में रामत्व ला सकती है।

उदारवादी श्रीराम – वाल्मीकि के राम कृतज्ञ एवं उदार हैं। स्वयं वाल्मीकि ने उन्हें अनेक स्थलों पर ऐसा कहा है।5 श्रीमद भागवत पुराण के प्रथम ,द्वितीय, दशम एवम एकादश स्कंध में रामावतार के वर्णन में भी राम के उदारवादी प्रवृति का उल्लेख मिलता है। [5]

सीता की प्राप्ति में सहायता करने वाले हनुमान, सुग्रीव तथा विभीषण के प्रति राम अत्यंत कृतज्ञ हैं। अयोध्या में वे मंत्रियों के सम्मुख सुग्रीव एवं हनुमान के पराक्रमपूर्ण कार्यों की प्रशंसा करते हैं, जो उनकी उदारता को ही परिभाषित करता है।[6] इतना ही नहीं वे जानते हुए भी कि कैकेयी ने ही उन्हें बनवास दिलाया है- उन्होंने कैकई के प्रति उदारता दिखलाई है। वे लक्ष्मण से कहते हैं कि मेरी समझ में कैकेयी का यह विपरीत मनोभाव विधाता का ही विधान है। यदि ऐसा नहीं होता वह मुझे वन में भेजकर पीड़ा देने का विचार क्यों करती ?[7] राम की उदारता का प्रमाण कई स्थलों पर मिलता है वे भरत को तथा लक्ष्मण को कैकई के विरुद्ध कुछ भी कहने से रोकते हैं।[8]

धर्माज्ञता - महाकवि वाल्मीकि ने राम के लिए धर्माज्ञ, धर्मपरिरक्षिता, धर्मभृंतावरम, धर्मवत्सल: , धर्मात्मा , धार्मिकं , धर्मवत्सलम् इत्यादि विशेषण से अभिभूत किया है। श्री राम को वाल्मीकि ने साक्षात" शरीरधारी धर्म" कहा है।

"रामो विग्रहवान धर्म:"[9]

ऐसे धर्म पुरुष का होना आज की प्रासंगिकता बनती जा रही है। हर क्षेत्र में सफेद चादर पर अधर्म की काली छाया पढ़ती सी प्रतीत होती है।

श्री राम पिता की आज्ञा ,मित्र का हित ,शरणागत की रक्षा ,प्रजा - पालन आदि धर्मों के प्रति पूर्णत: निष्ठावान एवं जागरूक हैं। पितृ - सेवा को तो वह अपना सबसे बड़ा धर्म मानते हैं ।राज धर्म के विषय में राम का लक्ष्मण से कथन है कि - जो राजा प्रतिदिन प्रजा के कार्य को नहीं करता है , वह निसंदेह घोर नरक में पड़ता है।[10]

आज हर घर में राम जैसा पुत्र हो इसमें रावणी प्रवृत्ति का अभाव हो । आज हर माता-पिता अपने पुत्र को राम की तरह देखना पसंद करते हैं । फिर भी ओल्ड एज होम भरा पड़ा है । वाल्मीकि के राम का धार्मिक अपकर्ष हमें सोचने पर मजबूर कर रहा है। राम की रमणीयता सर्वत्र व्याप्त हो जाए तो हमारा समाज आदर्श समाज की देहरी पर ही खड़ा होगा। पिता के पास जब भी राम जाते हैं तो वे हाथ जोड़कर व चरणों में झुक कर प्रणाम करते हैं।[11]

वे कहते हैं कि पिता की आज्ञा पालन ना करने की सामर्थ मुझ में नहीं है। वन गमन प्रसंग में जब कौशल्या राम को बन जाने से मना करती है तो वे मां से कहते हैं कि पिता के वचनों का उल्लंघन करने की शक्ति मुझमें नहीं है।[12] राजा दशरथ चाहते हैं कि राम वन को नहीं जाए परंतु उन्हें पूर्ण विश्वास है कि उनका पुत्र उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर ही नहीं सकता। (वाल्मीकि रामायण 2/12 /85- 86)

राम की पितृ भक्ति यहां भी परिलक्षित होता है जहां कैकेयी से वे स्वयं कहते हैं कि" मैं राजा की आज्ञा से अग्नि ने कूद सकता हूं ,तीव्र विष का पान कर सकता हूं तथा समुद्र में डूब सकता हूं।[13]

मातृभक्ति एवम् भ्रातृ स्नेह - धर्म पुरुष राम मातृभक्ति एवं भ्रातृस्नेह में आदर्श हैं। राम के द्वारा राज्याभिषेक के स्थगित होने की सूचना अपनी माता को देना, उनकी मातृभक्ति का अन्यतम उदाहरण है। वन गमन से पूर्व वे लक्ष्मण से अपनी माता कौशल्या की रक्षा करने के लिए भी कहते हैं। इतना ही नहीं वे दशरथ के कौसल्या को सम्मान देने की प्रार्थना करते हैं । उनको चिंता है कि कहीं उनकी माता कौसल्या पुत्र शोक के कारण प्राण न त्याग दे।[14]

श्री राम अपनी विमाता को भी समुचित सम्मान करते हैं तभी तो मंत्रा द्वारा राम के विरुद्ध भड़काया जाने पर उनकी विमाता कहती है कि राम कौशल्या से बढ़कर मेरी सेवा करते हैं। राम अपने भाइयों को बहुत प्यार करते हैं एक स्थल पर वे लक्ष्मण से कहते हैं - यदि भरत को ,तुम्हें तथा शत्रुघ्न को छोड़कर मुझे कोई सुख प्राप्त होता है तो अग्नि देवता उसे भस्म कर दें।[15]

रावण की शक्ति से घायल लक्ष्मण को देखकर राम अत्यंत विचलित हो जाते हैं ,और अकस्मात उनके मुख से यह बात निकलती है कि प्रत्येक देश में स्त्रियां मिल सकती हैं, बंधु वर्ग भी मिल सकते हैं परंतु मैं उस प्रदेश को नहीं देखता हूं ,जहां सहोदर भाई मिल सके।[16]

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च वान्धवा:
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरा:।।

निष्कर्ष - महर्षि वाल्मीकि ने राम जैसे चरित्र को विश्व का चरित्र बना दिया । समस्त विश्व किसी न किसी मुद्दे पर एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा दिख रहा है। आज राम जैसे चरित्र की प्रासंगिकता और बढ़ गई है ।श्री राम धर्म के साक्षात प्रतिमूर्ति हैं जिन्हें वाल्मीकि ने धर्म पुरुष के रूप में ही अवतरित किया है।
विश्व - जनमानस को राम का यह चरित्र आत्मसात कर ही लेना चाहिए।

पाद टिप्पणी
1 (मनुस्मृति 6/92)
2 (याज्ञवल्क्य स्मृति 1 /122)
3 श्रीमद् भागवत
4(धनंजय, दशरूपक/2/1-2)
5 (वाल्मीकि रामायण 1/1/2/22, 1/2/31, 2/8/14),श्रीमद भाग्वत चूर्निका टीका 1/3/22.
6 (वाल्मीकि रामायण 6/128/39 , 6/128/ 85-86)
7(वाल्मीकि रामायण 2/22/16)
8(वाल्मीकि रामायण 2/101/17, 3/16/37)
9(वाल्मीकि रामायण 3/37/13)
10(वाल्मीकि रामायण 7/53/6)
11(वाल्मीकि रामायण 2/3 /32-33)
12(वाल्मीकि रामायण 2/21/30
13(वाल्मीकि रामायण 2/12 /85- 86)
14(वाल्मीकि रामायण 2/38/ 14- 15)
15(वाल्मीकि रामायण 2/97/8)
16(वाल्मीकि रामायण 6/101/15)

संदर्भ ग्रंथसूची

1. वाल्मीकि रामायण
2. मनुस्मृति
3. याज्ञवल्क्य स्मृति
4. दशरूपक
5. श्रीमद् भागवत
6. कल्याण